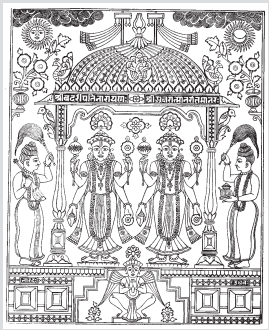

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ ● फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ | अंक : ६१ | मई-२०१२

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३.	स्त्रियों को समान अधिकार	४
४.	देशकाल	५
५.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से...	७
६.	सत्संग बालवाटिका	९
७.	भक्ति सुधा	११
८.	सत्संग समाचार	१६

॥ अग्रमदीयम् ॥

किस देश, किस काल, कौन से संग, कौन सी क्रिया जिसका संबन्धभगवान की आज्ञा हो तो भी नहीं करना चाहिये ? जिस देश में रहे हों, वहाँ के देह से संबन्धित लोगों के साथ वारम्बार उठने-बैठने का योग होने से उस देश का भगवान की आज्ञा हो तो भी त्याग करना चाहिये, वहाँ रहना नहीं चाहिये । जिस जगह पर मेरा दर्शन होता हो और साथ में स्त्रियों का दर्शन होता हो तो ऐसे संग तथा क्रिया में हम बैठते हों तो वहाँ उस काल में, उस स्थान पर, उनके संग में नहीं बैठना चाहिये किसी बहाने से वहाँ से हटजाना चाहिये । यदि किसी विषम परिस्थिति में कहीं मारपीट होती हो तो वहाँ के लिये भगवान की आज्ञा होने पर भी वहाँ से निकल जाना चाहिये ।

किस शास्त्र को सुनना चाहिये और पढ़ना चाहिये, किस शास्त्र को न सुनना चाहिये और न पढ़ना चाहिये ? जिस शास्त्र में भगवान के साकारपना का प्रतिवादन न किया गया हो तथा भगवान के अवतार का निरुपण न किया गया हो तथा वह ग्रन्थ शुष्क वेदांत हो एवं जिसमें एकमात्र अद्वितीय निराकार का प्रतिपादन किया गया हो ऐसे ग्रन्थ को किसी अप्रतिम प्रतिभा वाले ने लिखी हो तो भी उसे न पढ़ना चाहिये और न लिखना-चाहिये और नहीं सुनना चाहिये ।(व. लो. ध.)

कितने लोग निष्प्रयोजन कोई पुस्तक दे देते हैं उसे लेकर लोग गाँव के हरिमंदिर में बांचने के लिये रख देते हैं, वह योग्य नहीं है । हम तो श्री नरनारायण देव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा मे जो सत्शास्त्र छपा हो उसे ही वांचन करे और मनन करें । कितने लोग सुशोभन वाला एवं आकर्षक पुस्तकें छपाकर हरिभक्तों को विनामूल्य की देते हैं । जिस विषय का ज्ञान होता ही नहीं ऐसी पुस्तक लोग ले भी लेते हैं ।

अब सभी को इस विषय में ध्यान रखना है किं महाराज की इस विषय में विशेष आज्ञा है कि ऐसी पुस्तकें न रखें और न वांचे । कारण यह कि ऐसी पुस्तकों के वांचने से जीव का कल्याण नहीं होता और मोक्ष बिगड़ जाता है । इसलिये जिस साहित्य का वांचन करें वह उत्तम साहित्य हो तथा आचार्य महाराजश्री की आज्ञावाला साहित्य हो तो ही उसका वांचन करें ।

शास्त्री स्वा. हरि कृष्णदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण

(महंत स्वा.) श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालूपुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१२)

१. रामनवमी, सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्योत्सव के दिन कालूपुर मंदिर में अक्षरभुवन बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये।

२. वांकानेर गाँव में बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

३-६ भुज, केरा, गोधरा (कच्छ) पदार्पण।

७. पुराने गीराता गाँव के मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर नीलकंठनगर (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

९. प. पू. बड़े महाराज श्री के ६९ वाँ प्रागट्योत्सव दिन के प्रसंग पर आयोजित कीर्तन-भक्ति के कार्यक्रम को अपनी शुभ उपस्थिति में कालूपुर मंदिर में धूमधाम से सम्पन्न किये।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा (मूली देश) खातपूजन प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोडा खातपूजन प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४. श्री हर्ष शुक्ल के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा प. भ. प्रभुदास केशवजीभाई चौहाण के यहाँ महासभा प्रसंग पर पदार्पण, चांदलोडिया।

१५. वसई टींबा - संतरामपुर (पंचमहाल) सतसंगशिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

१५-१७. पूना में हालार के हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।

१८-१९. चौबारी (कच्छ) पदार्पण।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर, उनावा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर, चांदखेड़ा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर, अरोडा (ईडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३. बीलीया (ता. सिद्धपुर) गाँव में पदार्पण।

२५-२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।
कोटेश्वर वास्तु प्रसंग पर पदार्पण।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर, बोपल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री डाह्याभाई (शिलालेख फ्लेट वाला) के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, सायंकाल जीरागढ (हालार) पदार्पण।

२९-३०. श्री स्वामिरायण मंदिर, जीरागढ (मूली देश हालार) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्र प्रसाद जी महाराज के कार्यक्रम की रूपरेखा -

(अप्रैल-२०१२)

१. रामनवमी श्री हरि के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर अक्षर भुवन बालस्वरूप घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण। रात्रि में १०-१० बजे सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर आरती उतारने पधारे।

६. अहमदाबाद मंदिर में श्री हनुमानजी जयंती प्रसंग पर आयोजित मारुती यज्ञ की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदलोड़िया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण। श्री स्वामिनारायण मंदिर वहेलाल द्वार के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण।

२३. श्री समीरभाई आर. परीख के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

स्त्रियों को समान अधिकार

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

विश्व में आध्यात्मिक क्षेत्र मे - धर्मकार्य, सेवा, पूजाविधि, के लिये पुरुषों की तरह स्त्रियों को सर्वप्रथम समान अधिकार भगवान स्वामिनारायण ने दिया है।

वैश्विक परंपरा में ऋषियों ने वेद पढने का स्त्रियों को अधिकार नहीं दिया। इसी तरह विश्व में अनेकों ऐसे धार्मिक संप्रदाय हैं जहाँ पर स्त्रियों को धर्मकार्य से वंचित रखा है। पश्चिम के देश जो अपने को अत्याधुनिक मानते है वे भी स्त्रियों को धर्मकार्य से वंचित रखते है। आज इक्कीसवी सदी में दुनिया प्रयाण कर रही है - स्त्रियों को समान अधिकारी होनेका सर्वत्र नगारा बज रहा है, लेकिन धर्म कार्य में स्त्रियों को समान अधिकार एक मात्र भगवान नारायण ने दिया।

आज दुनियां में यहूदी धर्म के लाखों संख्या में चर्च हैं। उसमें प्राय: पुराने करार को मानने वाले यहूदियों के चर्च में स्त्रियों को प्रवेश नहीं मिलता है लेकिन इस्लाम धर्म के अनेक पंथों में मस्जिद के भीतर स्त्रियों को कुरान पढ़ने का अधिकार नहीं है। इसके साथ मुख्य धर्म स्थान पर तथा मक्का की मस्जिद के मुख्य भाग में स्त्रियों का जाना प्रतिबन्धित है। मौलवी के पद पर पुरुषों का अधिकार है। आधुनिक कहेजाने वाले ख्रिस्ती धर्म के अर्थोडोक विभाग के चर्च में स्त्रियों का प्रवेश नहीं होता। इसके अलांवा ख्रिस्ती धर्म के पोप के रुप में भी स्त्रियों को स्थान नहीं मिलता। पूर्व के अनेकों देशों में धर्म के गुरुपद पर स्त्रियों को अधिकार नहीं मिला है। अपने हिन्दूधर्म में भी वेद पढने के अधिकार से तथा श्राद्धकर्म-पिंडदान, पितृकर्म देवपूजा से स्त्रियों को वंचित रखा गया है। फिर भी भगवान स्वामिनारायण ने इन सभी का विरोधकरके आध्यात्मिक क्षेत्र में स्त्रियों को अधिकार देकर क्रांतिकारी कार्य करके एक उदाहरण दिया है। जितना अपने संप्रदाय में स्त्रियों को अध्यात्मिक सुरक्षा है वह अन्यत्र नहीं है। हिन्दूधर्म में धर्म गुरुओं द्वारा जहाँ पर स्त्रियों को धर्मोपदेश की परम्परा चल रही है वहाँ पर प्राय: गुरुओं का पतन हुआ है। वहाँ की परम्परा में स्त्रियों का ऊर्ध्वगमन के बदले अध:पतन हुआ है। स्वामिनारायण संप्रदाय में सर्वप्रथम सहजानन्दजीने नीलकंठ वर्णी के रुप में लोज गाँव में स्त्री-पुरुषों की सभा अलग-अलग प्रारंभ की। स्त्री-पुरुषों के अलग-अलग दर्शनार्थ मंदिरों का निर्माण करवाया। यदि एक मंदिर हो तो दर्शन की व्यवस्था अलग-अलग की। मंत्र दीक्षा की व्यवस्था भी अलग की - जिसमें पुरुष वर्ग को दीक्षा आचार्य महाराजश्री करें और महिला वर्ग को मंत्र दीक्षा आचार्य पत्नी (गादीवाला) जी प्रदान करें, यह दीक्षा आज भी प्रवर्तमान है। यह सब उदाहरण सर्वप्रथम अपने सम्प्रदाय से प्रारंभ हुआ। आजभी यह निर्दोष प्रक्रिया चल रही है। अन्यत्र तो प्रारम्भ से ही सदोष दिखाई दी है। आज दुनिया में रिसर्च करने वाले असंख्य तत्वचिंतको के ध्यान में यह बात आते ही संप्रदाय के स्त्रियों की गुरु गादीवाला होती है तो भगवान स्वामिनाराण स्त्रियों के एक मात्र सर्वप्रथम उद्धारक है ऐसी यशोगाथा हजारों पन्नों में लिखडाले है।

शिक्षा पत्री श्लोक नं. १३३ में सहजानन्द स्वामीने लिखा है कि अयोध्याप्रसाद तथा रघुवीर प्रसाद इन दोनो आचार्यों की पत्नियाँ अपने पति की आज्ञा से श्री कृष्ण मंत्र की दीक्षा स्त्रियों को प्रदान करें। शतानंद स्वामीने सत्संगिजीवन के ४ थे प्रकरण के २१ वें अध्याय में दीक्षा विधिप्रकरण में स्त्रियों को आचार्य की पत्नी से दीक्षा लेने की बात कही हैं और उन्हीं की आज्ञा में रहने को कहा है। पुरुषो तथा स्त्रियों की दीक्षा विधिमें मात्र इतना फर्क है कि पुरुषवर्ग आचार्य महाराज श्री के पास दाहिने कान में मंत्र दीक्षा लें तथा महिला वर्ग गादीवालाजी के पास बाये कान में मंत्र दीक्षा लें। मंत्र दीक्षा देकर वे कहती हैं कि है शिष्या ! तुम्हारे पुण्य के प्रताप से तुम्हारे पति भी भगवान के पार्षद बनेंगे। मातृकुल तथा पितृकुल भी सद्गति को प्राप्त होगा।

आज अमेरिका जैसा विकसित देश भी सर्वोच्च स्थान पर महिला को बैठने नहीं देता। लेकिन आज से २०० वर्ष पूर्व सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायणने संप्रदाय के सर्वोच्चपद पर स्त्रियों की गुरु ऐसी गादीवालाजी को त्यागी-गृही के गुरुपद पर आचार्य पत्नी को रखा। त्यागी बहनों की तपश्चर्या से भी अधिक पू. गादीवालाजी का तप अधिक कठिन होता है। गृहस्थाश्रम का उत्तदायित्व सम्भालते हुये परोक्ष में रहकर (ओझल) संप्रदाय की त्यागी-गृही बहनों का ध्यान रखना, सत्संग का पोषण करना तथा प्रचार करना बहुत कठिन है; यह भगवान के सिवाय संभव ही नहीं है। यह सामान्य व्यक्ति का काम नहीं है। भगवान द्वारा प्रवर्तित यह संप्रदाय भगवान ही इसे चला सकते है।

इस परंपरा का अनुसरण आज तक कोई अन्य संप्रदाय नहीं कर सका। इसके अलांवा संप्रदाय से निकल कर अलग अस्तित्व बनाने वाले भी इस लाभ से वंचित हैं। प.पू. आचार्य महाराज श्री का सत्संग विचरण अविरत संप्रदाय में हो रहा है। इसी तरह प.पू.अ.सौ. गादीवाला जी भी बहनों के उत्कर्ष-सत्संग के लिये अविरत देश-विदेश में विचरण कर रही हैं। इस संप्रदाय में बहनों के सत्संग का विकास उत्तरोत्तर वृद्धिगत है। कारण यह कि भगवान ने ही यह गुरुपद प्रदान किया था।

गत मार्च मास में अन्तिम पक्ष में ७०० बहनोने धपैया धाम में पाँच दिन तक शिबिर में प.पू. गादीवाला जी का अत्यन्त निकटता से दिव्य लाभ लिया था।

देशकाल

साधु घनश्याम प्रकाशदास - जमीयतपुरा (महंत स्वामी-माणसा)

''देश काल ने क्रियाए करी
केदि तमने न भूलिये हरि ।''

भक्त चिन्तामणी के ६४ वें प्रकरण में फूल दोलोत्सव प्रसंग पर हरिभक्तों ने श्री हरि से आशीर्वाद के रुप में उपरोक्त वर मांगा । अनादिकाल से इतिहास साक्षी है कि भगवान जब सामने आते हैं तो उन्हें भक्त पहचान नहीं पाता तो कोई अपनी आँख पर पट्टी बाँधलेता है, किसीके सामने आकर भी अदृष्ट जैसी स्थिति होती है, किसी को संग दोष कारण बना, किसी का भोलापन काम कर गया । महारानी कैकेयी की दासी मंथरा, महाराज धृतराष्ट्र का सलाहकार शकुनि की सलाह भगवान के सामने विद्रोह करने के लिये प्रेरणारुप हो गयी । बाल भक्त ध्रुव, तथा वालिया डांकू को महर्षि बनाने में तथा प्रभु की प्राप्ति में कारणभूत नारदजी जैसे संत की प्रेरणा निमित्त बनजाती है । यह सब देखकर या चिन्त न करके स्पष्ट होता है कि पूर्वजन्म के प्रारब्धके सिवाय ऊर्ध्वगति या अधोगति में अन्य भी कारण होते हैं । इस बात को भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत गढडा प्र. ७ वें में कहा है कि ''मारवाड ने विशे केटलाक पुन्यवाला राजा थया छे तेमने अर्थे सो हाथ उंडा पाणी हता ते उपर छल्ला थया नथी, अने जो पूर्व कर्म ने वश देश होय तो पुण्य कर्म वाला ने अर्थे पाणी ऊंचा आव्या जोइये ने पापीने अर्थे ऊंडा गया जोईये, पण एम तो थतुं नथी अने मारवाड देशमां तो पापी होय अथवा पुन्य वाला होय पण उन्डा पाणी उपजे पण ते देश पोताना गुण नो त्याग करतो नथी । माटे देशकालादिक तो पूर्वकर्मना फेरव्या करे नहीं.... वणी ग. अ. १३ में कहते है कि ''जीव नो देह छे ते तो पूर्व कर्मनो आधीन छे । तेनो एक निर्धार रहेतो नथी ते क्यारेक साजो रहे ने क्यारेक कर्मधीन वणे करीने मांदो थई जाय अने धार्यु होय ते ठेकाणे रहेवाय के न रहेवाय अने क्यारेक हरिभक्त ना मंडल मां रहेता होइये ने कर्म के काल ने योग करी ने नोखा पड़ी गया ने एकला ज रही जवाय त्यारे जे जे नियम राखवानी दृढता होय तेनो कांई मेल रहेज नहीं अथवा अंग्रेज जेवो कोईक राजा होय ने तेणे कांइक परवश राख्या त्यारे जे संत ना मंडल मां रहेवुं ने सत्संग नी मर्यादा पाणवी तेनो कांई मेल रहे नहीं ।''

इस तरह साम्प्रदायिक दृष्टांतो में प्रेमसखी प्रेमानन्द की तरह दूसरे एक संत थे जिनका नाम था कोडी सखी । इनके रुप तथा कंठ से प्रभावित होकर गायकवाड की तरफ से बुलावा आया कि आप को हमारी सभा में गायन करना है यह सुनते ही स्वामी का मन ललचाया और सत्संग छोड़कर संसार में चले गये । महाराज उनका हाथ पकड़कर रोकने का खूब प्रयास किये लेकिन उनके पतन

को कौन रोक सकता था । चिन्तामणी के समान सत्संग तथा परम चिन्तामणी के समान परमात्मा को छोड़कर चले गये परिणाम स्वरुप कुछ ही समय में उन्हें रक्तपित्त की महा बिमारी हुई और कीर्ति-कामिनी से वंचित रह गये ।

इसी तह गढपुर - जीवाखाचर अपने भतीजा दादाखाचर के साथ ईर्ष्यारुपी अंतर कलह के कारण महाराज को जान से मारने का प्रयास किये । झांझावदर के अलैयाखाचर ने स्वामी मुक्तानन्द जी का गला काटने के लिये सम्पूर्ण प्रयास किया । इसी तरह फुईबा भी विपरीत देशकाल का भोग बनी थीं । जो लोग उनके सामने पड़े उनका पतन हुआ और जो लोग उनकी आज्ञा का अनुसरण किये उनका उत्थान हुआ है । फुईबा अपनी मर्जी का जीवन भर करती रहीं परिणाम स्वरुप अनंत जन्म के गर्त में गिर गयी । इसलिये महाराज ने ग.प. ७२ के वचनामृत में स्वामी गुणातीतानंद जी के उत्तर में कहा है कि ''देशादिक विषम होय त्यां तो उगर्या ना एज उपाय छे जे त्यांथी जेते प्रकारे करीने भागी छुटवुं । ग.प्र.५२ में आनंदानंद स्वामीने महाराज से प्रश्न किया कि पूर्व का संस्कार मलिन होतो किस तरह टलेगा ? इसके उत्तर में महाराज ने कहा कि ''अतिशय जे मोटा पुरुष होय तेनो जे ऊपर राजीपो थाय तेना गमे तेवा मलिन संस्कार होय ते नाश पामे अने मोटा पुरुष नो राजीपो थयो होय तो रंक होय ते राजा थाय अने गमे तेवुं तेना माथे विघ्न आवनारु होय ते नाश थई जाय ।''

इसके अलांवा देश काल के विपरीत फल होने पर भी भगवान तथा संत की कृपा से मीठा फल मिलता है । इसका एक उदाहरण - गलुजी के ऊपर आने वाली आपत्ति को महाराज ने एक छोटी चिट्ठी के माध्यम से दूर कर दिया । बाउद्विन कठियारा गुणातीतानंद स्वामी के आशीर्वाद से दीवान बन गया । गधे के ऊपर मिट्टी लाकर घड़ा बनाने वाला कुम्भकार ब्रह्मानंद स्वामी के बड़े पेट का स्मरण करने से अन्तकाल में श्री हरि द्वारा अपने धाम को लेजाया गया । लालजी सुथार के घर चोरी करने आये हुये चोरों का भव सुधर गया । भावा मुसा की कंपनी की लाई खाकर स्वामीने उन्हें निर्विकारी बना दिया ।

ओहो ! सत्संग का कितना उत्तम इतिहास है ।

इस संत्संग में भगवान की तथा संतो की कृपा से शाश्वत सुख प्राप्त करने के अनेको उदाहरण है । इसलिये सभी भक्तों को चाहिये कि विपरीतकाल-परिस्थिति में भी भगवान का तथा संत का आश्रय कभी नहीं छोड़ना चाहिये । मन को दृढ करके एक मात्र भगवान की भजन करने से यह लोक तथा परलोक दोनो ही सुधरेगा । सत्संग का सहारा लेकर संसार सागर से पार हो सकते हैं - सभी लोग ऐसा करे ऐसी सभी से अभ्यर्थना ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से..

म्युजियम में दर्शन के लिये आनेवाले सभी को म्युजियम के बनाने वाले प.पू. श्री तजेन्द्र प्रसादजी महाराज के दिव्य संकल्प का एहसास होने लगता है। इस वर्ष प.पू. बड़े महाराजश्री उपने जन्म दिन के समय अर्थात् ९-४-१२ को भारत मे नहीं थे लेकिन आस्ट्रेलिया में थे, उस समय यहाँ के सत्संग समाज को प.पू. महाराज श्री के न रहने की कमी महसूस हो रही थी। फिरभी सत्संगी एकत्र होकर म्युजियम में ही जन्म दिन मनाने का निश्चय किये। श्री नरनारायणदेव के अचल स्वरुप का अभिषेक तथा महापूजा करते समय सभी लोगों को मानो महाराज श्री बिरजमान हों ऐसा अनुभव हो रहा था। सभी को फोटो के भीतर से ही आशीर्वाद दे रहे हों ऐसी अनुभूति हो रही थी। कारण यह कि म्युजियम का वातावरण ही ऐसा है कि आने वालों के सभी मनोरथ पूर्ण होते रहते हैं। वर्तमान में मणीनगर विस्तार के एक हरिभक्त केतनभाई मनुभाई पटेल के सुपुत्रका दाहिना पैर जल गया था, उन्होंने संकल्प किया था कि मेरा पैर अच्छा हो जायेगा तो हम पैदल घर से म्युजियम दर्शन करने जायेंगे। उसकी मनोकामना पूर्ण होते ही वह घर से (मणीनगर से) म्युजियम में दर्शन करके धन्यता का अनुभव करने लगा। ऐसे तो प्रायः प्रसंग बनते रहते हैं। अरे, सत्संगियों की तो बात ही अलग अन्य लोग भी जब म्युजियम में दर्शन करने आते हैं तो वहाँ का वातावरण देखकर दिव्यता का अनुभव होने लगता है। यह वहाँ के वातावरण का ही प्रभाव है। वृद्धाश्रम से आये हुये करीब १०० जितने वृद्धाश्रमियों को भी यहाँ के दर्शन में निरव शान्ति का अनुभव हुआ था। कदाचित उन वृद्धों की सन्तान यहाँ दर्शन करने आये तो उनके मनमें (विचार में) परिवर्तन हो और वृद्धाश्रम से वृद्धश्रमियों की संख्या घटे ऐसा विश्वास है।

(-प्रफुल खरसाणी)

श्री स्वामिनाराण म्युजियम के श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक कराने वालों की नामावली - अप्रैल - २०१२

ता. १-४-१२	चांदनी अशोकभाई पटेल - लंडन (मांडवी-कच्छ)
ता. ४-४-१२	गोपालदास भोगीलाल मोदी - अमदावाद कृते रविन्द्र गोपाल दास मोदी
ता. ९-४-१२	प.पू. बड़े महाराज श्री के जन्मदिन के अवसर पर महापूजा तथा अभिषेक के यजमान मुकेशकुमार कांतिलाल पटेल - कलोल। डॉ. कान्तिलाल तथा न्युजिलेन्ड के सत्संगी हरिभक्त।
ता. २४-४-१२	पटेल जनार्दनभाई मगनदास प्रोफेसर, मीतेशकुमार आर. योगेशभाई एस. कृते मुकेशभाई के. - कलोल।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली - अप्रैल - २०१२

२,४४,९००/-	न्यूझिलेन्ड में प.पू. बड़े महाराजश्री की पधरामणी प्रसंग पर आई चरण भेट।
२,५१,००००/-	अशोककुमार जमीयतराम पंड्या उर्वषीबेन अे. पंड्या।
१,५०,०००/-	शामजीनाराणभाई केराई - मांडवी - कच्छ
१,१०,०००/-	विनयभाई जयंतीलाल भट्ट - अहमदाबाद कृते धर्मप्रसादभाई शुक्ल
५१,०००/-	तेजेन्द्र इन्फ्रास्टच्कर प्रा. ली., अहमदाबाद
३२,५८४/-	गं.स्व. वालभाई शीवजी राबडीया - मांडवी-कच्छ कृते स्व. रामबाई नारण राबडीया - मांडवी-कच्छ

११,०००/- कु. वनेशा सुधीरभाई परसोत्तमभाई कृते दासभाई - हर्षद कालोनी, बापूनगर

११,०००/- कु. नेहा सुधीरभाई परसोत्तमभाई कृते दासभाई - हर्शद कालोनी - बापूनगर

५१०१/- श्री स्वा. मंदिर महिला सत्संग समाज - वहेलाल

५१०१/- राकेश विनोदभाई जोइताराम प्रजापती - माणसा

५१०१/- नरनारायण होस्पिटल - माणसा डॉ. पी. एम. पटेल कृते - पराग, भूमिका

५००१/- जिज्ञेश जयंतीभाई अंबालाल - तखतपुरा (माणसा)

५०००/- डॉ. रमेशभाई आर. परीख की पुण्यतिथी के निमित्त डॉ. योगिनी बहन आर. परीख - अहमदाबाद।

५०००/- कनुभाई मोतीभाई पटेल - वडोदरा

५०००/- डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई पटेल - सापावाडा

५०००/- महेशभाई एस. पटेल (लालोडावाला) वापी शिवके मिकल्स - वापी।

अभिप्राय

इस स्वामिनारायण का दर्शन करके खूब आनंद हुआ। ऐसे कार्य करने वाले प.पू. बड़े महाराजश्री के चीजों में कोटि-कोटि प्रणाम। इस तरह का म्युजियम सभी मंदिरों में बनाया जाय तो श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुओं का सही ढंग से रखरखाव हो सकेगा अन्यथा पत्र तत्र नष्ट प्राय होजायेंगी।

(पुराणी परमदंसदासदी, पु. माधवचरणदासजी -भुज)

''नभूतो न भविष्यति'' पामर जीव के कल्याण के लिये आचार्य महाराजश्री द्वारा आधुनिक समय में जिस प्रतिष्ठान को (दिव्य म्युजियम को) प्रजा के समक्ष रखा गया है यह अजोड़ है यह सम्पूरअमता का द्योतक है यह अनुभूत हो चुका है। श्रीजी महाराज सभी का कल्याण करें ऐसी प्रार्थना । श्रीहरि इस तरह उत्तरोत्तर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संत - हरिभक्तों से मुमुक्षुओं के लिये कार्य कराते रहें ऐसी प्रार्थना।

(-एच. एम. दवे (एडवोकेट) अमदाबाद)

श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुओं का जिस तरह रखरखाव का कार्य हो रहा है - यह दर्शन करते ही सभी को अनुभव होने लगता है। दर्शन के साथ ही हृदय तथा आंखों में आनन्द की लहर फैल जाती है। २०० वर्ष पहले का श्रीहरी के समय का दृश्य सामने जीवन्त दिखाई देने लगता है। इसके लिये अपने शब्द कम होते दिखाई देते है।

(-माधवजीवनस्वामी - श्री स्वा.म. जूनागढ)

श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करके यह अनुभव हो रहा है कि मन सदा यहीं रहे। इसी में यथार्थ शान्ति है अन्यत्र तो अशान्ति का वातावरण है।

(-श्रद्धाजवेरी - अहमदाबाद)

आज हमारी संस्था में रहनेवाले ऐसे वृद्ध जिन्हे उनके बेटो ने छोड़ दिया है वे म्युजियम का दर्शन करके आनन्द का अनुभव किये हैं। विगत जीवन में परिवार द्वारा जो दुःख-वेदना-कष्ट भोग करके वृद्धाश्रम में आये आज यहाँ के दर्शन के बाद वह सब आनन्द में परिणत हो गया। यहाँ पर सेवा करने वाले कार्य सेवकों ने उन वृद्धों को म्युजियम में रखे हुये प्रभु के प्रसादी की वस्तुओं का जब हार्द बताया तो वे आनंदित हुये और अपने हृदय में उतारे।

(-फरसुभाई कक्कड (ट्रस्टी श्रीजीवन संध्या वृद्धाश्रम - नाराणपुरा)

The Museum offers Prasadi goods Which I would have never seen in my entire life. Thanks to the Maharaj shree for the vision and giving us the opportunity to see these divine objects. - Jayesh H. Hirani

It was very Beautiful.

- Nobuyuki Niyachi (Tokyo, Japan)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आने के लिये बस नं.६८ कालूपुर टर्मिनल, सारंगपुर, रायपुर, एस.टी., जमालपुर, पालडी, लो-गार्डन, पंचवटी, सी.जी. रोड, लाल बंगला, विजय चार रास्ता, पलीयडनगर, नारणपुरा गाँव, श्री स्वामिनारायण म्युजियम - प्रगतिनगर, कर्मचारीनगर, सत्ताधार सोसायटी, इसी रुट से कहीं भी वापस जाया जा सकता है।

सत्संग बालवाटिका

लेखक-शा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

"पाप को प्रोत्साहन नही देना चाहिये"

शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

गुजरात के चरोतर प्रदेश के डभाण गाँव में भगवान स्वामिनारायण बिराजमान थे। प्रात: काल का समय सूर्य अपने सारथी अरुण को आगे करके धीरे-धीरे आकाश की प्राची दिशा में आगे बढ़ रहे थे। उसी समय श्री हरि प्रात: दैनिक कृत्य सन्ध्या-वन्दन पूजा करके भक्तों को दर्शन देने के लिये सभा में पधारे; उस समय उत्सव चल रहा था। महाराज सभी को स्वमुख से उपदेश करने लगे।

हे भक्तों ! जो ज्ञानी हैं, समाज में अग्रसर हैं, विद्वान और समर्थ हैं। क्या अच्छा- क्या बुरा इस बात को अच्छी तरह जानते भी हैं फिरभी जीभ की तथा मन की इच्छा पूर्ण करने के लिये सुरापान करते है और अभक्ष्य को खाते हैं। वे तो स्वयं पतित होते ही हैं साथ में उस मदिरा तथा अभक्ष्य का प्रचार-प्रसार करके जनता को गलत मार्ग पर लेजाते हैं। ऐसे व्यक्ति चाहे विद्वान क्यों न हों उनका पतन तो निश्चित ही होता है। मृत्यु के बाद भूतयोनि में ब्रह्मराक्षस होना पड़ता है।

स्वामिनारायण भगवान डभाण की सत्संग सभा में यह बात कह रहे थे उसी समय दयाशंकर नामक एक ब्राह्मण विराजमान थे वे प्रभु की इस वाणी को बड़ी एकाग्रता से हृदय में उतार रहे थे। वे सभा में खड़े होकर कहने लगे हे प्रभु ? आपकी यह बात एकदम सत्य है। मेरे अनुभव की बात यदि आप आज्ञा दें तो कहूँ। महाराज ने हाँ कंह दिया और ब्राह्मण देवता कहने लगे।

मैं काशी में संस्कृत व्याकरण शास्त्र पढ़ने गया था। दो वर्ष का अभ्यास क्रम था। मुझे काशी विद्यापीठ में पढ़ने को मिला। मैं अपने माता-पिता को प्रणाम करके गाँव से काशी के लिये प्रस्थान किया। जैसे अन्य विद्यार्थियों को बाहर काशी में पढने का अवसर मिलता है वैसे मुझे मिला इसलिये मेरे आनंद की सीमा न रही। वहाँ के छात्रालय में रहना, भोजन करना तथा विद्याभ्यास करना था। (उस समय शिक्षण मुफत में होता था इतना खर्चावाला नहीं था।)

काशी के विद्वानों के मार्गदर्शन में पढने की मजा आती थी। गृहपति पूरा दिन रहे और सायंकाल होते ही दरवाजा बन्द हो जाता था। बाद में सभी विद्यार्थी अपने पढे हुये विषय पर चर्चा करते, मुखपाठ करते, गृहकार्य करते इस तरह डेढप्रहर तक बीत जाने पर सभी गाढ निद्रा में सो जाते।

एक दिन मध्य रात्रि में देखा कि एक विद्वान पंडित संस्कृत का शुद्ध उच्चारण करते हुये मेरी तरफ आये और कहने लगे कि अरे ! तुम लोग ऐसा अशुद्ध उच्चारण क्यो कर रहे हो ? अशुद्ध उच्चारण से प्रगति नहीं होती इससे अपकीर्ति फैलती है। आओं मैं शुद्ध उच्चारण सिखाता हूँ। इस तरह वे विद्वान प्रति मध्य रात्रि को आते और हमारे जैसे जिज्ञासु विद्यार्थियों को पढाते। कुछ समय के बाद हमारे गृहपति ने कहा कि जब हम सो जाते हैं तब तुम लोग किसके साथ पढते हो। तब हमने कहा कि जब अर्धरात्रि हो जाती है तब एक विद्वान पंडित आते हैं और शुद्ध उच्चारण के साथ पढाते हैं। लेकिन छात्रो ! आप सभी को पता है कि मैं दरवाजा बन्द करके ताला मार देता हूँ फिर सोने जाता हूँ। अन्दर कोई कैसे आ सकता है ? जब कि चारो तरफ से आने की कोई संभावना ही नहीं है तो आता कौन है और कैसे आता है ?

क्या, आप लोग दिन में उन पंडित जी को देखे हो ?

हमने तथा हमारे अन्य मित्रोने ना कर दिया। यह सुनकर गृहपति कहने लगा बालकों सुनो ! वह ब्रह्म राक्षस हैं। स्वयं विद्वान था लेकिन मदिरा मांस का सेवन करता, व्यसन-हिंसा तथा भोग विलास का प्रचार करता। इतना बड़ा विद्वान था कि किसी को भी शास्त्र में रोक सकता था। लेकिन गलत कर्म में समर्थन करता। पंडित होते हुये भी

अधर्म का आचरण करता । शास्त्र का जानकार होते हुये भी स्वतंत्र अर्थघटन करके गलत मार्ग पर चलना और दूसरो से भी कहता । इसलिये मरने के बाद प्रेतयोनि में ब्रह्म राक्षस हो गया ।

हे महाराज ! काशी में बनी यह घटना यथार्थ जानकर अपने अभ्यासक्रम को बीच में ही छोड़कर आपकी शरण में आया हूँ । आपकी शरण में सभी शास्त्रो का सार है । वह अनुभव से समझ में आ गया है । आपने जो कहा कि ''समर्थ तथा शास्त्रों का जानकार होते हुये भी जो असद्वृत्ति को नहीं रोकता उसे प्रोत्साहित करता है तो निश्चित ही वह मरकर प्रेतयोनि में जाकर ब्रह्मराक्षस होता है । यह बात कल्पना की नहीं है । सत्य है । दयाशंकर भाई ने इन आँखो से देखा है और अनुभव किया है । इसलिए जीवन में असत्कर्म करना नहीं तथा उसे प्रोत्साहन भी नहीं देना । सदा सन्मार्ग पर रहकर भजन-भक्ति करके सद्गति को प्राप्त होना चाहिये । इस बात को भगवान स्वामिनारायणने स्वयं कही है । इस बात को आधारानंद स्वामी ने अपने लेखों में लिखा है ।

"जिसका जैसा संकल्प"

साधु श्री रंगदासजी (गांधीनगर)

एक राजा अपने राज्य की सीमा वाले जंगल में घूमने निकला । गाँव की प्रजा सुखी है या दुःखी तथा किसानों का क्या समाचार है यह सब देखने के लिये राजा स्वयं निकल पड़ा । पुराने समय में राजा स्वयं अकेले निकला करते थे । राजा राम भी वेश बदलकर निकलते थे । यह राजा जब निकला तो जंगल में घूमते-घूमते प्यास लग जाती है, बहुत दूर तक खोजने पर उसकी एक किसान से भेंट होती है । किसान ने विचार किया कि यह कोई शिकारी होगा । यदि पानी माँगेगा तो नहीं दूंगा । संयोग से राजा ने पानी माँगा तो उसने मना कर दिया पानी नहीं है । राजा ने कहा कि पूरे दिन तूं यहाँ काम करता है पानी नहीं है ऐसा कैसे हो सकता है । तूं झूठ बोल रहा है । इतने में राजा को पेड़ पर लटका घड़ा दिखाई दिया । राजा उस घड़े की तरफ आगे बढता है, इतने में किसान ने उस पर पत्थर मारकर घड़े को फोड़ देता है और पानी गिरजाता है । राजा बिना पानी के वापस आता है । प्यासा अपने राजमहल वापस आकर चिन्तन करने लगा । दूसरे दिन अनुचरों से कहा कि ''अमुक जगह पर अमुक किसान को बुला लाओ ।'' वह किसान वहाँ आकर राजा को देखा तो कांपने लगा । मन में विचार करने लगा कि कल जिसे मैने पानी नहीं पिलाया वे तो राजा हैं । अब मुझे फांसी होगी । अधिकारी लोग चिट्ठी तैयार कर रहे थे । कचहरी में बांचकर सुनाया गया कि राजा अपने संकल्प पर दृढ हैं जो सोचे हैं वही करेंगे । अब वह किसान मन में विचार कर रहा हैं कि मैं राजा को तृसित हालत में भी पानी नहीं पिलाया, उसी का परिणाम होगा कि राजा ने संकल्प किया है । मुझे फांसी देने के लिये लेकिन हुआ कुछ और राजा ने कहा कि जब मैं प्यास से बिह्वल इस किसान के पास जा रहा था उस समय मेरे मन में संकल्प हुआ कि यदि यह किसान मुझे पानी पिलाता है तो मै इसे एक गाँव बक्शीस में दे दूँगा । लेकिन यह भले मुझे पानी नहीं पिलाया मैं इसे गाँव को देकर संकल्प पूरा करुँगा । उधर किसान कहने लगा कि राजन् ! आप हमें मांफ करें मैं आपको पहचान नहीं सका आप कोई शिकारी है इस लिये पानी नहीं पिलाया ।

जीव तो गल्ती करता ही है, उसका यही धर्म है । भगवान की कृपा का कोई पार नहीं है । स्वामिनारायण भगवान संकल्प करके आये हैं ''जेने जोईये ते आओ मोक्ष मांगवा, आज धर्मवंशी ने द्वार ।'' भगवान स्वामिनारायण की शरण में आनेवाले को अन्न-वस्त्र की कमी नहीं रहती क्योंकि उन्होंने संकल्प किया है । इतना ही नहीं जो जीव उनकी शरण में आयेगा उसका मोक्ष भी करेंगे । क्योंकि भगवान तो देनेवाले है । आप का स्वभाव चाहे जैसा हो ईश्वर का स्वभाव फर्ज पूर्ण करने के लिये है अब आप ईश्वर के प्रति कैसी भावना रखते हैं वह आपका विषय है । इसलिये भगवान को पहचान कर उन्ही की भजन-भक्ति करनी चाहिये ।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से

निरन्तर सत्संग से कारण शरीर का विनाश होता है। मनुष्य की शरीर के माध्यम से मनुष्य परमात्मा की उपासना - ध्यान इत्यादि से अपार शक्ति प्राप्त करलेता है। अपार शक्ति प्राप्त करने के लिये वह सतत प्रयत्नशील रहे तभी यह सम्भव है। जिस तरह किसान पानी के एक-एक बूंद को खेत में यथार्थ उपयोग करता है इसी तरह परमात्मा से मिली अपार शक्ति का उपयोग आध्यात्मिकता के लिये करना चाहिये। मनुष्य शरीर परमात्मा की कृपा से इसलिये मिली है कि वह अपना कल्याण कर सके, कल्याण भी आत्यन्तिक कल्याण मोक्ष प्राप्ति। मनुष्य शरीर के भीतर स्थूल - सूक्ष्म - कारण इस तरह तीन रुप में जीव की माया है। इसमें अपनी शरीर पंचतत्वों से बनी हुई है। (पृथ्वी - जल - तेज - वायु - आकाश)। सूक्ष्म शरीर मन के साथ जुडा हुआ है। इसके साथ २१ तत्व और भी है पाँच प्राण, पांच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, चार अन्तकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) तथा तीसरा कारण शरीर है। वह जीव के साथ जुड़ा हुआ है। जीव की कारणरुपी जो माया हैं वह शरीर से अलग नहीं होती और कारण शरीर ही स्थूल और सूक्ष्म शरीर को उत्पन्न करता है। कारण शरीर अनादि है। संचित कर्मो का मूल है। सच्ची मुक्ति तो कारण में है। स्थूल शरीर से पूजन-अर्चन-श्रवण-कीर्तिन-सत्संग की सेवा यह सब होता है। सत्संग में जो कुछ सुने हों वही सूक्ष्म देह में जब निरन्तर मनन होता है तभी यथार्थ ज्ञान होता है। परंतु सूक्ष्म देह में मनन करने के लिये मन पर नियंत्रण होना आवश्यक है। अपनी जो विषयरुपी वासना है वह विच्छू के डंक से भी अधिक विषकारी है। इसका कारण यह कि विषय के सुख का मन में विचार आता है। जब मनुष्य सत्संग से दूर होता है तभी उसमें यह दोष आने लगता है। तभी पतन भी होता है। इसलिये मन में रहनेवाली विषय वासना को पुष्ट नहीं होने देना चाहिये। शास्त्रों में जो दृष्टांत दिया जाता है कि भव-ब्रह्मादि देवताओं के जीवन में भी ऐसा ही हुआ है। माया के परवश होकर सभी का पतन होता है। वासना व्यक्ति की कमजोरी है। इसमे हम कमजोर न बने इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। स्थूल-सूक्ष्म-शरीर के माध्यम से नियमित सत्संग करके आसक्ति के विना निष्काम भक्ति करना चाहिये। श्रीहरि ने कारियाणी के १२वें वचनामृत में लिखा है कि "गमे तेवो कामी, क्रोधी, लोभी लंपट नीच हो वह भगवान में विश्वास करता हो तो उसका सभी विकार नष्ट हो जाता है। जिस तरह मजबूत दांत से चना चबाया जा सकता है लेकिन कच्चा आम खाने के बाद भात भी खाना कठिन हो जाता हैं उसी तरह चाहे जितना भी कामी व्यक्ति हो यदि वह भगवान की भक्ति करने लगता है तो उसकी वासना धीरे-धीरे नष्ट होजाती है। कृच्छ-चान्द्रायणादिक व्रत करने से भी शरीर से विषयवासना खत्म होती है। आप लोग निर्विषयी होकर यदि भगवत भक्ति करेंगे तो निश्चित ही परमश्रेय होगा। इसलिये पूर्णपुरुषोत्तम में प्रीति रखकर उन्हीका सतत श्रवण-मनन-निदिध्यासन करते रहना चाहिये इससे निर्बिषयी होने का और कोई अन्य सरल उपाय नहीं है। सत्संग के प्रभाव से भी मन को केन्द्रित किया जा सकता है। कारण यह कि सत्संग से ही मनुष्य का कल्याण होता है। महाराज की भी यहाँ इच्छा थी कि सत्संग सदा चालू रहे इसी सत्संग को ध्यान में रखकर श्रीहरिने अहमदाबाद में सर्वप्रथम श्री नरनारायण देव का मंदिर बनाया। जब अंग्रेजी सरकार निन्याबे वर्ष के पट्टे पर जमीन दे रही थी तब महाराज ने कहा कि आप यावच्चन्द्र दिवा करौ के रुप में जमीन दीजिये और ऐसा ही हुआ। उसी का प्रभाव है कि आज सत्संग सतत चालू है और आगे भी इसी तरह से आप लोग सत्संग में प्रवृत्त रहियेगा। इसीलिये प.पू.

गादीवाला जी भी निरन्तर रातदिन अथक परिश्रम करके - गाँव-शहर दूर-नजदीक - अमीर-गरीब का भेदभाव विना रखे सत्संग शिबिर करती हैं । इससे संप्रदाय के मूल सिद्धान्त की पकड़वनी रहेगी और सभी एक दूसरे के नजदीक आ सकेंगे ।

(-संकलन-कोटक वर्षा नटवरलाल कोठारी)

स्वामी सहजानन्द

हम सभी स्वामिनारायण के सत्संगी बड़े धूमधाम के साथ श्री स्वामिनारायण जयन्ती (रामनवमी) का उत्सव किये । अपने भगवान की बात तथा चरित्र का स्मरण करेंगे तो मन में प्रभु के प्रति निष्ठा दृढ होती जायेगी । प्रभु हमारा उद्धार करेंगे इसलिये उन्हीं प्रभु की बात हम करें यहाँ ठीक है ।

जब सम्पूर्ण भारत अधोगति की तरफ जा रहा था और गुजरात का कोई रक्षक नहीं था । उस समय पेशवा तथा गायकवाड़ सरकार मनमाने ढंग से शासन कर रही थी । चारो तरफ लूटपाट - व्यभिचार की बोल बाला थी । दूसरी तरफ नास्तिक धर्म का विस्तार हो रहा था पाखंडी लोगों की बोलबाला थी । तांत्रिकों का भी आक्रमण था । हिंसा, सती, बाल हत्या इत्यादि जैसे अनैतिक कार्य चल रहे थे । उसी समय भारतवर्ष में संवत १८३७ चैत्र शुक्ल नवमी को अयोध्या के पास छपैया गाँव में धर्म उद्धारक, समाज उद्धारक श्रीहरि का प्रादुर्भाव हुआ था । प्रभु के जन्म से पूर्व रामानन्द स्वामी के शिष्य गोविन्ददासने ''कलियुग ना गरबा'' नामक पुस्तक में लिखा है कि ''करुणा करीने कृष्ण कलि माँ प्रगट थशे'' वे पुरुषोत्तम भगवान काम, क्रोध-लोभ मद के त्यागी होंगे और साधु को बनायेंगे ।

ऐसे अपने स्वामिनारायण भगवान हरिप्रसाद पाण्डेय (धर्मपिता) तथा प्रेमवती (भक्तिमाता) से उत्पन्न हुये थे । प्रभु ने स्वयं कहा था कि मैं अयोध्या के पास छपैया गाँव में सरयूपारीण ब्राह्मण के घर में प्रगट होऊँगा । सावर्णि गोत्र कौथुमी शाखा सामवेद तीन प्रवर (भार्गव-वैतहव्य-सावेतस) पाण्डेय परिवार श्री हरिप्रसादजी हमारे पिता होंगे । उनके पिता को शिरनेत्र राजाने इटार गाँव को दान दिया था । इससे उन्हें इटार के पाण्डे कहा जाता था । बाल्यावस्था से प्रभु के तप करने की भावना थी इसलिये वे सरजू में स्नान करना, मंदिरों में दर्शन करना, कथा सुनना, इत्यादि करते रहे । प्रभु अपने अवतार का प्रयोजन पूर्ण करना चाहते थे लेकिन माता-पिता के रहते गृह त्यागना सम्भव नहीं था । इसलिये कुछ समय तक वहाँ रहे । माता-पिता के अक्षरधाम होते ही सम्बत १८४९ में आषाढ शुक्ल दशमी को प्रभुने गृहत्याग कर दिया । साथ में मात्र मूंज की मेखला, कौपीन, मृगचर्म, पलाश दंड माला-कमंडलु, भिक्षापात्र कन्धे पर यज्ञोपवीत, नित्यपाठ की गुटका, कंठ में तुलसी की माला, शालिग्राम भगवान को लेकर ११ वर्ष की उम्र में गृहत्याग करके उत्तर की तरफ हिमालय के लिये प्रस्थान कर दिये । उसी समय से उन्हे नीलकंठ कहा जाने लगा । सात वर्ष १ मास ११ दिन तक तपस्या-देश भ्रमण, अधर्म का डच्छेदन का कार्य मात्र उन्नीस वर्ष में भारत देश के स्वर्णाक्षरों में लिखा गया ।

लोज गाँव में संप्रदाय के अवतार स्वरुप श्री रामानंद स्वामी गुरु के रुप में मिले । रामानंद स्वामी को भगवान श्री कृष्ण की आज्ञानुसार - इष्टदेव भगवान मिले । रामानंद स्वामी कहते थे कि मैं भाविनट के आगमन की डुगडुगी बजा रहा हूँ । स्वामी रामानंद के उपदेश के अनुसार प्रभुने सुदृढ-चरित्र, भक्ति, त्याग वैराग्य का अवलंबन लेकर संप्रदाय को आगे बढाया ।

ऐसे अपने प्रभु श्री स्वामिनारायण भगवान के जीवन की कथा को हृदय में उतार कर जीवन को सफल बनायें ।

जयश्री स्वामिनारायण (क्रमशः)

(सां.यो. कंचनबा ध्रांगध्रा)

सत्संग की समझ होनी चाहिये

मनुष्य जन्म में मनुष्य की तीन अवस्था कही गयी है । बाल, युवा, तथा वृद्धावस्था । इस मनुष्य जन्म को

प्राप्त करके व्यक्ति को जीवन सुधार लेना चाहिये। पशु-पक्षी तथा अन्य सभी प्राणी जी रहे है लेकिन सभी के जीने का अन्दाज अलग है जबकि समझदार तो मात्र मनुष्य है फिर भी वह समझ नहीं पाता। उसके जीवन में शांति कहाँ ? शांति तो सन्तो के जीवन में होती है। आनन्द में समय बीतता है जबकि मनुष्य मात्र सुख-दुःख के भंवरमे अपने समय बितता है। जीव अपने कर्म के प्रारब्धके अनुसार फल को प्राप्त करता है। कर्मफल भोगे बिना कर्म कटता नहीं है। व्यक्ति के विचार यदि पवित्र हैं तो वह प्रभु की तरफ बढ़ता है और सत्संग-भक्ति-भजन का सहरा लेकर शुभ फल को प्राप्त करता है अन्यथा गलत आचरण करने से शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती।

सत्संग करने से दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रहती है। सत्संग सच्चे दिल से करना चाहिये। सच्चे संत का समागम हो तो चाहे वह जीव कितना भी क्रूर स्वभाव का हो तो भी वह निर्मल मनवाला होजाता है। निर्मल मन से स्वीकार किया हुआ सत्संग जीवन को परिवर्तित कर देता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि मंदिर में जाते हैं लेकिन वहाँ जाकर दूसरों में दोष देखते है और संतो में अवगुण देखते हैं इससे उनका पतन होता है। निर्दोष भाव से यदि सत्संग करे तो निश्चित ही उत्तम पदवी को प्राप्त कर सकते है। एक उदाहरण - गाँव के बाहर एक महात्मा रहते थे, गाँव के लोग उनका दर्शन करने जाते। राजा भी दर्शन करने जाता। एक बार एक चोर भी दर्शन करने गया यद्यपि वह लूट-पाट-चोरी तथा अन्य सारे गलत काम करता था फिर भी महात्मा के यहाँ गया, उस समय कथा चल रही थी थोड़ी देर बैठकर कथा सुना, अब इतनी सुन्दर भगवान की कथा चल रही थी कि उसके मन में वहीं पर परिवर्तन हो गया। दूसरे दिन वह अपना वस्त्र उतारकर भगवा वस्त्र धारण करके महात्मा जी के पास पहुँच गया और भगवान के पास बैठकर ध्यान करने लगा।

उसी समय राजा भी वहाँ दर्शन करने आया। सभी संतो को प्रणाम किया और कुछ भेंट सौगात दिया, इसी तरह उस भगवावेशधारी चोर के पास भी गये और प्रणाम करके उसके पास भी भेंट सौगात रखे। यह देखकर उस चोर ने कहा कि राजन् ? मैं साधु नहीं हूँ मैं तो चोर हूँ। आज तक मैं चोरी करता रहा २ घन्टे के सत्संग के प्रभाव से मेरे मन में परिवर्तन हुआ और मैं साधु का वेश धारण कर लिया हूँ। यदि २ घन्टे में इतना हो सकता है तो जो जीवन समर्पित करते हैं उनका जीवन कितना सुन्दर होगा। जिस तरह पारसमणी के स्पर्श से लोहा भी कंचन हो जाता हैं ठीक उसी तरह मैं अधम-पापी-दुराचारी-ठग-चोर था परंतु यहीं पर कल संत समागम करने से आज मैं उस उच्च पदवी को प्राप्त हुआ हूँ कि आप जैसे राजा हमे वन्दन कर रहे है।

कहना यह है कि संत का वस्त्र अर्थात् भगवा वस्त्र पहनने के बाद जो नित्यचोरी करता था वह राजा के द्वारा दिया गया दान भी नहीं लिया। यह सन्त समागम का फल है, इतने जल्दी इतना परिवर्तन। स्वामिनारायण भगवानने कहा है कि जो भी भगवान की शरणागति लेगा या जो सन्त समागम करेगा उसका सर्वविधहम कल्याण करेंगे। उसकी सभी मनोकामना पूरी करेंगे। जीवन के अधःपतन से हम रक्षा करेंगे। इसलिये मनुष्य शरीर प्राप्त करके सदा सावधान रहना चाहिये जिससे फिरसे संसार के चक्र में न आना पड़े और प्रभुमय जीवन बीतता रहे। भगवान सभी को सद्‌बुद्धि प्रदान करें सभी सत्संग में अपना मन लगावें ऐसी प्रभु के चरणों में कोटि-कोटि प्रार्थना।

(सां.यो. कोकिलाबा - सुरेन्द्रनगर)

हे पुत्र माँ की ममता का विचार कर !

आज हम जननी की बात करते है । जननी का अर्थ होता है माता । माता समुद्र के समान है । जिसकी छाती में मानवता का जन्म होता है । जिसकी गोंद में संस्कृति का झूला है । इसीलिये कहा गया है -

जे मस्ती आँखो मां छे ते मदिरालय मां नथी होती ।
अमीरी दिलना कोई मोटा महालय मां नथी होती ।
शीतलता पामवाने कां दोट मुके ओ मानवी ।
जे मांनी गोंद मां होय छे ते हिमालय मां नथी होती ।

इसीलिये तो माता पिता को देव के समान कहा गया है । पिता की उत्तम सेवा करने वालों के कारण ही भारतभूमि का मस्तक उन्नत रहता है । पिताजी की इच्छा पूर्ण करने के लिये अपनी इच्छा की बली देने वाले भीष्म, राज्य गद्दी का त्याग करके बनमें जाने वालराम, कांवर में माता-पिता को लेकर तीर्थ कराने वाला श्रवण, इत्यादि पुत्रो से अपनी संस्कृति उज्वल है । अब तो समय बदल गया है । एक चौदह वर्ष के बच्चे से किसी पिता ने पूछा कि बेटा बड़ा होकर हमारी देखरेख रखेगा न ? पिताजी उस समय हमें अपनी पत्नी से पूछना पड़ेगा । यह सुनकर उस पिताकी क्या हालत हुई होगी ? आज के जमाने में आज के बालक कितनी निष्ठुरता से कह देते है कि मुझे अपनी पत्नी से पूछना पड़ेगा । आज समाज की यह लाचारी कही जायेगी या पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण या आंग्ल भाषा के अध्ययन का फल ? बालक इतने कठोर शब्द अपने मां-बाप को सुनातें हैं कि हृदय फट जाता है । जीवन संध्या निवास, तपोवनं, रामधाम शांतिसदन, पुत्र के घर या बंगला का नाम नहीं है यह तो वृद्धाश्रमो का नाम है । जहाँ पर अपने परिवार के कलंकित सन्तानो से त्यक्त या पीडित माँ-बाप सहारा लेते है । आँखों में आंसु, हृदय में प्रेमभरी दास्तां रखने वाले माँ-बाप दुर्दशा तथा दान के द्वारा चलते वृद्धाश्रमों में रहते हैं क्या यह भारत की शान है ?

हो सकता है कुछ माँ-बाप के स्वभाव खराब हों लेकिन वे अपनी ही संतान के बोझ बनजाते है यह तो माना ही नहीं जा सकता । जो माता-पिता शरीर-मन से थक गये है उन्हें भूख और लाचारी एवं अकेले रहने के लिये वृद्धाश्रमों में छोड़दिया जाता है । उस समय ऐसा लगता है कि जैसे कसाई खाने में गाय को ले जा रहा है । आज की सन्तान अपनी माता-पिता के साथ स्नेहभाव से रहने लगे तथा सेवा करने लगे तो समाज का बहुत बड़ा प्रश्न हल होजाय और धरती पर स्वर्ग होजाय । जीवित माता-पिता के मुख को बन्द करने वाले बालक मरने के बाद वे मुख में गंगाजल डालें तो क्या फायदा । अन्तर के आशीर्वाद देने वाले को दूर रखकर उनके फोटो को नमन करने से क्या फायदा ।

पैसा खर्च करने से सबकुछ मिलेगा माँ-बाप नहीं मिलेगें।
गया समय नहीं आयेगा लाखो कमा के क्या करना ।
प्रेम से हाथ फेरकर बेटा कहने वाला नहीं मिलेगा ।
बाद में उधार प्रेम लेकर आँसू बहाकर क्या करोगें ?

जब आप पृथिवी पर पहली श्वांस लिये तब आपके माता-पिता हाजिर थे उसी तरह माता-पिता के अन्तिम श्वांस के समय हाजिर रहना । जो अपने सदाचार से माता-पिता को प्रसन्न करता है वही पुत्र है । परन्तु आज का पुत्र तो मानो यह सब कुछ भूल गया है ।

इसलिये आज के पुत्रों को नीचे की बातो का ध्यान रखना चाहिये -

तुम जन्मे तब रो रहे थे और माँ हंस रही थी अब यह ध्यान रखना कि तुम हंसते रहो लेकिन माँ रोती न रहे ।

बचपन दूधसे जीवित रहता है वृद्धावस्था प्रेम (आदर) से जीवित रहती है । इसलिये दूधदेने वाली को प्रेम (आदर) अवश्य देते रहना । तुम लाचार थे उस समय माँ तुम्हारी रक्षा की जब माँ-बाप लाचार बनें तब उनकी रक्षा करना ।

पुत्र के लिये जिस माता ने खून का दूधबनाकर पिलाई हो उस माँ को भरदुपहरिया में खून के आँसू रुलानेवाला पुत्र नहीं हो सकता । सरसों के जितनी पेट में पथरी यदि रुला सकती है तो दो कि. वजन के तुम को पेट में कैसे रखी होगी ? तूं इतना विचार कर तूं भी कभी ऐसा होगा ।

संसार की दो ही करुणता है । माँ बिना घर और घर हो लेकिन माँ की कमी हो । इसीलिए हे प्रभु साप ऐसी करुणता का सर्जन ही न करें ।

माँ-बाप की आँखो में दो-बार आसुं आते है जब बेटी घर से बिदा होती है या जब पुत्र मा-बाप को छोड देता है । माँ

पुत्र के नहीं खाने पर रोती थी अब माँ रोती है क्योंकि बेटा माँ को नहीं खिलाता । यह कैसा दु:खद आश्चर्य है । आज जीते माँ-बाप को बच्चे चुप करवाते है और मरने के बाद उनके फोटो पर धूप जलाते है । घर का नाम मातृछाया-पितृछाया रखते हैं परंतु उसमें माँ-बाप का साया ही नहीं होता । हे पुत्रो, इसीलिये सावधान हो जाओ, जाग जाओ... अपने कर्व्य का विचार करो ! पुत्रो, अपने माता-पिता के लिए नहीं तो अपने लिए जागरुक हो जाओ, तुम अपने माता-पिता की सेवा नहीं करोंगे तो तुम्हारी सेवा कौन करेगा.... वे तो उन्होंने जो देखा होगा उसी का अनुसरण ही करेंगे । विश्वास न हो तो नीचे की सत्य घटना को देखिये ।

एक गाँव में एक गृहस्थ परिवार रहता था । इस परिवार में पुत्र अपने पिता की खुब सेवा करता था । परंतु उसका विवाह हुआ तो पत्नी के आने के बाद वृद्ध पिता की सेवा आदरपूर्वक नहीं करता था । एक दिन पत्नी के पढाने पर पिता से गुस्से में कहा, ''मेरी पत्नी को आपसे परदा करना पड़ता है तो उसे तकलीफ होती है । आज से आप भोजन के अलावा घर मे अंदर नहीं जाएगे । परंतु पशु बांधने के स्थान पर ही बैठे रहना । और ऐसा कहकर एक खटिया, चद्दर, कंबल, और दवा की बोतल दे दी । आपकी संपत्ति इतनी ही है और इसी खटिया पर बैठे रहना । यदि घर में पैर भी रखा तो दूसरे दिन वृद्धाश्रम में रख आऊँगा । उसके पिताने कहा, ''मुझे भूख लगे तो क्या करुंगा ?'' तो पुत्रने घंटी ला दी और कहा इस घंटी को खटिया से बांधदेता हूं उसमे ड़ोर लगाकर घर तक जोड़ देता हूं । मेरी पत्नीको कहदेता हूँ कि भोजन तैयार हो जाये तो घंटी बजा दिया करे । घंटी बजे तो भोजन करके वापस अपने स्थान पर लौट आना । वृद्ध पिता भी क्या कर सकता था ? बेमन से दिन बिताकर जीवन व्यतीत करने लगा ।

बस इसी प्रकार घंट बजने पर वृद्ध भोजन करने जाता । एक दिन छोटे बच्चेने आकर पूछा, दादाजी ! आपके पाँव के पास में घंटी क्यो बांधा है । जो दादाने संपूर्ण बात बता दी । सुनकर बच्चेने घंट छोड दिया और छुपा दिया । जब भोजन तैयार हो गया तो पत्नीने डोर खींची लेकिन पूरी डोर हाथ में आ गई और घंटी नहीं बजी । बच्चे से पूछा तो कहा कि मैंने छुपाया है । मैंने घंटी को इसीलिए छुपा दिया कि आप दोनो जब दादा की उम्र के होगें तो मुझे नया घंट न खरीदना पड़े । यह सुनकर मम्मी-पापा आश्चर्यचकित हो गये । और पुन: घंट नहीं बांधा ।

बच्चों का स्वभाव ही ऐसा होता है इसीलिए संस्कार अच्छे देने चाहिए । यदि माता-पिता की सेवा न करनी होतो वृद्धाश्रम में अभीसे अपनी बुकिंग करवा लीजिए । नहीं तो वहाँ भी जगह नहीं मिलेगी । इसीलिए श्री स्वामिनाराण भगवानने सर्व जीवहितावह शिक्षापत्री के १३९ मे श्लोक में आज्ञा की है कि जो गृहस्थ हो उन्हें माता-पिता गुरु, रोगातुर मनुष्य की सेवा जीवनभर करनी चाहिए ।

जो मेरी आज्ञा का उल्लंघन करेगा वह जीवनभर दु:खी होगा । क्योंकि माता-पिता की बददुआ भी लगती है । जिससे वह कभी सुखी नहीं हो पाता । हे पुत्रो ! काले मस्तिष्क के मनुष्य शायद हर चीज की गीनती कर सकता है लेकिन माता-पिता के स्नेह का उपकार कभी नहीं गीन सकता । इसीलिए -

भूलो भले बीजुं बधु माँ-बाप ने भूलशो नहीं,
अगणित छे उपकार अेना, एह विसरशो नहि,
असह्य वेठी वेदना, त्यारे दीठुं तम मुखडुं,
ऐ पुनित जनना काणजा, पथ्थर बनी छुंदशो नही,
काढी मुखेथी कोणिया, मोंमा तई मोटा कर्या,
अमृत तणा देनार सामे झेर उगणशो नहि,
खूब लडाव्या लाड, तमने कोड़ सौ पूरा कर्या,
ए कोड़ना पूरनारना, कोड़ पूरवा भूलशो नहि,
लाखो कमाता हो भले, पण मा-बाप जेथी ना ठर्या,
ए लाख नहि पण राख छे, ए मानवुं भूलशो नहि,
संतान थी सेवा चहो, संतान छो सेवा करो,
जेवुं करो तेवुं भरो, ए भावना भूलशो नहि,
भीने सुई पोते अने, सूके सुवाड्या आपने,
ऐनी अमीमय आँखने, भूली भींजवशो नहि,
धन खरचता मणशे बधुं पण माता-पिता मणशे नहि,
एना पुनित चरणों तणी, कदी चाहना भूलशो नहि,

(सा. योगी. गीताबा, आनंदीबा, विरमगाम)

सत्संग समाचार

अमदावाद, कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी का उत्सव धामधूम से मनाया गया ।

श्रीजी महाराजने जो उत्सवकी प्रणाली बनाई है इसके पीछे का रहस्य यह है कि अंत समय तक उत्सव की लीला याद आये तो निश्चितरुप से कल्याण होता है। चैत्र कृष्ण-९ को अपने कालुपुर, स्वामिनारायण मंदिरमें प्रातः ७ बजे अक्षर भुवनमें बीराजीत बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो से संपन्न हुआ था। पूजारी स्वामी परमेश्वरदासजी ने सुंदर व्यवस्था की थी । इस अवसर पर भक्त लोग दर्शन कर के धन्य हुए । पश्चात सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराज गादी पर बीराजमान हुए वहाँ यजमान परिवारने पूजन अर्चन किया था । अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामीने भगवान का माहात्म्य बताया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमानो को आशीर्वाद दिये थे, पश्चात बालस्वरुप घनश्याम महाराज की प.पू. महाराजश्री ने अन्नकुट आरती की थी । दोपहर को १२ बजे श्री रामजन्मोत्सव की आरती धामधूमपूर्वक हुई थी, शाम को ७ से १० तक सभामें श्री जयेशभाई सोनी और हरिभक्तोने कीर्तन का सुंदर लाभ दिया था । रात १०-१० को भगवान स्वामिनारायण का प्राक्टोत्सव मनाया जिसकी आरती पू.पू. लालजी महाराजने उतारी थी और संत-हरिभक्तोने इसका लाभ लिया था । इस अवसर पर कोठारी पार्षद दिगंबर भगत की प्रेरणा से श्री जे. के. स्वामी, जे. पी. स्वामी योगी स्वामी और ब्रह्मचारी राजेश्वरानंदजी आदि संत मंडल ने सुंदर सेवा की थी नरनारायणदेव उत्सव मंडल ने सुंदर उत्सव किया था।

(-शा. नारायणमुनिदास)

अहमदाबाद मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का ६९ वाँ प्राकट्योत्सव धामधूम से संपन्न हुआ ।

प.पू. बड़े महाराजश्री इस साल अपने जन्मदिन पर ऑस्ट्रेलिया और न्यूझिलेन्ड की यात्रा में थे । दिनांक ९-४-१२ चैत्र वद त्रीज के दीन अहमदाबाद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभनिश्रामें सभामंडप में संत हरिभक्तने बडी संख्या में स्वामिनारायण महामंत्र धुन और भजन-कीर्तन किया था । और श्री नरनारायणदेव के चरणोंमें शुभकामना प्रगट की थी ।

(-नारायणमुनि स्वामी)

अहमदाबाद मंदिर में मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद और अक्षरनिवासी वार्षद मोहोब्बतसिंहजी भगत, स.गु. महंत शा. हरि कृष्ण दासजी और हजुरी पार्षद वनराज भगत की प्रेरणा से श्री हनुमानजी महाराज एवं गणपति महाराज के पूजारी पा. बाबु भगत और पा. महादेव भगत के सेवा-मार्गदर्शन से चैत्र कृष्ण-१५ को स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर में कष्टभंजन देव का प्रथम बार मारुति यज्ञ का आयोजन हुआ था, जिसका लाभ हरिभक्तोने लिया था श्री गणेशजी एवं श्री हनुमान दादा को सुंदर रुप से सजाया गया था । यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती प.पू. लालजी महाराजने उतार कर दिव्य लाभ दिया था ।

(-विश्वराजसिंह भगत)

अहमदाबाद, नारणपुरा मंदिर में श्री हरि का २३१ वाँ प्राकट्योत्सव - समूह महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से नारणपुरा मंदिर में रामनवमी के अवसर पर महंत शा.स्वा. हरि. ॐ प्रकाशदासजी के मागदर्शन से समूह महापूजा का आयोजन हुआ था । जिसमें ५ मुख्य के साथ ३११ हरिभक्तोने ८ से ११ के दौरान महापूजा का लाभ लिया था, समापन पर प.पू. आचार्य

महाराजश्रीने पधार कर आरती उतारी तथा भक्तो को आशीर्वाद दिये थे । दोपहर के १२ बजे जन्मोत्सव के पश्चात फलाहार की सुंदर व्यवस्था जेतलपुर के महंत के. पी. स्वामी ने की थी रातमें ८ से ११ तक कीर्तन भक्ति कथा-वार्ता आदि शा. प्रेमस्वरुपदासजी और संत मंडलने की थी । पूजारी स्वामी ने भगवान को सुंदररुप से सजाया था । प्रागट्योत्सव की आरती के पश्चात सुंदर केक इस प्रागट्योत्सव के यजमान अपने मंदिर के ट्रस्टी प.भ. दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल के पौत्र श्री धर्मेश अमितभाई ने भक्तो के साथ मनाई थी प.भ. घनश्यामभाई जयंतीभाई (थोल) की तरफ से फ्रुट सलाड का प्रसाद दिया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के ४०० सक्रिय भाई-बहन हर शनिवार को ८.३० से १० बजे तक सत्संग को वेग मिले ऐसी प्रवृत्ति करते है । इस अवसर पर जेतलपुर से प.पू. शा.स्वा. वी.पी. स्वामी ने पधार कर सुंदर उद्‌बोधन किया था । नेशनल टंकी वाले प.भ. नवीनभाई पटेलने सुंदर सेवा की थी । १७-०४-१२ को नारणपुरा से कालुपुर पदयात्रा और ५-५-१२ शनिवार रात १२.३० को नारणपुरा से जेतलपुर पूनम पर पदयात्रा का आयोजन पू. महाराजश्री के आज्ञा से किया है।

(-विशाल भगत)

सर्वोपरी छपैया धाम में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की उपस्थिति में दिव्य महिला शिबिर

सर्वोपरि तीर्थभूमि छपैया धाम के दर्शन की बेचेनी होती है । क्योंकि जहाँ इष्टदेवने जन्म लिया वो कितनी पावन होगी । ऐसे अलौकिक स्थल पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला के शुभ संकल्प और आज्ञा से हवेली में एकादशी की सभा में छपैया शिबिर की जानकारी दी गई थी । सभी बहनो ने बहुत आनंदपूर्वक भाग लेने के संकल्प के साथ ७५० बहनोने नाम लिखवाये । इस प्रसंग पर लाखो लोग आते क्योंकि प.पू. गादीवालाश्री का नाम सुनकर बहने सारा काम छोड़ कर आगे आए ऐसी निष्ठा बहनो में थी ।

दि. २३-३-१२ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और पू. श्री राजा के साथ साम ५.०० बजे पधारी तब समस्त बहनोने स्वागत किया । वहाँ से प.पू. गादीवालाश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और पू. श्री राजा दर्शन करने पधारे थे । शाम ८ से ११ कीर्तन-भक्ति कार्यक्रम अपनी उपस्थिति में हवेली में कर साख्ययोगी बहनो को लाभ दिया था । पश्चात दिन को १.०० बजे प.पू. गादीवालाश्री और शिबीरार्थी बहने और पू.श्री राजा के साथ छपैया की प्रदक्षिणा कर रात ९ से ११ कीर्तन भक्ति कार्यक्रम प.पू. गादीवालाश्री और श्री राजा की उपस्थिति में हुआ । बाद में २५-३-१२ को सुबह ९ से ११ तक सुंदर सभा का आयोजन हुआ था । इस सभा में श्री राजा की नानी, मामी, मामा की बेटी भी पधारी थी । जिससे बहनो को विशेष लाभ मिला था । क्योंकि ऐसे दर्शन दुर्लभ होते हैं । शिबिरार्थी छोटी लडकियोंने स्वागत नृत्य किया जिसमें श्री राजा ने भी भाग लिया था । शाम संध्या आरती के बाद समूह आरती नारायण सरोवर पर की थी । पश्चात जन्म स्थानमें बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की समूह आरती उतारी थी ।

रात ९.०० बजे से पूरी रात जागरण कर सांख्ययोगी बहनो द्वारा कथा-वार्ता एवं कीर्तन एवं रामनवमी करीब होने से रात को घनश्याम महाराज का प. पू. गादीवाला के साथ धामधूमपूर्वक मनाया गया था । पू. गादीवाला ने प्रसन्न होकर सबको आशीर्वाद दिया था ।

दि. २६-३-१२ को सुबह ५.३० को मंगला आरती के दर्शन कर अयोध्या गई जहाँ से हर तीर्थ के दर्शन कर इस शिबिर का लाभ लेकर ट्रेन में अहमदाबाद आगमन किया था इस शिबिर में बापुनगर युवक मंडल ने खूब सेवा की थी ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) - गेरिता गाँव प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान गेरिता गाँव में ११ बार पधारे थे । जिससे ये प्रसादी की भूमि है, यहाँ तालाब के किनारे प्रसादी की छत्री है । जिस पथ्थर पर

बैठे वो पथ्थर प्रसादी का है, यहीं ब्रह्मानंदस्वामी का नाम श्री रंगस्वामी दिया गया । एक हरिभक्त के वहाँ प्रसादी का रुमाल है । दुसरे मंदिरो में प्रसादी की चीजे है । इस गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से दि. ३-४-१२ से दि. ७-४-१२ पर्यन्त मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का सुंदर आयोजन हुआ था । जिसके मार्गदर्शक स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) और प्रेरक स.गु. महंत और प्रेरक स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु.स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत) रहे थे । स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने अपनी शैली में कथामृतपान करवाया था । महोत्सव के दौरान पोथीयात्रा, श्री कृष्ण जन्मोत्सव, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का पदापर्ण, ठाकुरजी की नगरयात्रा, व्यसनमुक्ति जैसे कार्यक्रम हुए थे । मूल दरबार और भावसार परिवार का सत्संग आज भी वैसा ही है ।

इस अवसर का लाभ लेने मुंबई, अहमदाबाद आदि स्थान से भक्त आये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज पधारे तब सारे गाँव में उत्सव हुआ । और पश्चात प्राणप्रतिष्ठा की आरती कर सभा में प.पू. महाराजश्री पधारे । प्रासंगिक सभा में संत प्रेरकवाणी के पश्चात प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा आपके बुजुर्गो ने श्री हरि को प्रसन्न किया वैसे आप सब रोज मंदिर जाना दर्शन करना और महाराज की आज्ञा का पालन करना आप सब बहुत खुश होंगे ।

इस अवसर पर अहमदाबाद, मूली, वडनगर और माणसा आदि धाम से संत पधारे थे । शा. स्वा. अभयप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर) ने यज्ञ विभाग में और शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी अन्नकुट विभाग में, शा. स्वा. ब्रजभूषणदासजी (नारायण घाट) सुशोभन विभाग में, शा. दिव्यप्रकाशदासजी रसोई विभाग में सुंदर सेवा की थी ।

(-शा. पुरुषोत्तमप्रकाश दासजी - नारायणघाट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरियामें मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी और स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से चैत्र कृष्ण-१५ को श्री हनुमान जयंती के अवसर पर मारुति यज्ञ का आयोजन हुआ था । पूर्णाहुति की आरती पू. माधव स्वामी और नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी ने उतारी थी । सभा में संतोने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया था और कष्टभंजन देवका महिमा समझाया था । पश्चात प्रसाद दिया गया था । श्री कष्ट भंजन मंडल द्वारा पीछले ११ वर्षो से पाठ करते है । जिसे ११ वर्ष पूर्ण होते हनुमान चालीसा के पाठ किए थे ।

(-डॉ. हिरेन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर - वडनगर

ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक नगरी वडनगर, श्री स्वामिनाराण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र शुक्ल-९ को महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से मंदिर को बहुत सुंदर रुप से सजाया था । और १०-१० को श्री हरि प्राकट्योत्सव के अवसर पर उत्सव एवं कीर्तन भक्ति की थी ।

महंत स्वामीने प्राकट्योत्सव की कथा की थी । पश्चात श्री हरि को पालने में रखकर आरती उतारी गई थी । छोटे बच्चोनें 'हम सहजानंदी सिंह' कीर्तन पर नाटक कर प्रेरणा प्रदान की थी । इस अवसर पर श्री विष्णुभाई कचरादास पटेल (भगनानपुरा) तथा श्री विरजीभाई परिवारने सेवा का लाभ लिया था । श्री कालिदास जे. पटेल, श्री रवि सुथार, श्री रुत्विकुमार मोदी, भौमिक चोक्सी तथा जय चोक्सी ने प्रेरणा प्रदान की थी ।

(-नविनभाई मोदी, वडनगर)

श्री स्वामिनाराण मंदिर, गुलाबपुरा का ५७ वाँ पोटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और

प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराज के आशीर्वाद से तथा अ.नि.स.गु. स्वामी हरिस्वरुप दासजी की प्रेरणा से ८-४-१२ को चैत्र कृष्ण-२ को गुलाबपुरा मंदिर का ५७ वाँ पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया।

इस अवसर पर दि. ८-४-१२ को सुबह ९.०० बजे ठाकुरजी का पूजन और १२.०० बजे अन्नकुट की आरती हुई थी । दोपहर में महाप्रसाद और पश्चात शोभायात्रा के लिए भगवान निकले थे और भक्तो के वहाँ पदार्पण कीये। अमहदाबाद से नरनारायण स्वामी के साथ प.भ. सोमाभाई एन. पटेल, कोठारी गांडाभाई पटेल और सभी हरिभक्तो ने सुंदर सेवा की थी। दर्शन कर के हर हरिभक्त धन्य हुए थे।

(-अल्पेशभाई पटेल)

श्री नरनारायण देव युवक मंडल, बापुनगर द्वारा रक्तदान शिबिर

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६९वें प्राकट्योत्सव के उपलक्ष्य में दि. ८-४-१२ को रविवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से राजगार आरती के पश्चात शिबिर प्रारंभ हुआ था । रेडक्रोस सोसाईटी की सहायता से सीवील होस्पिटल के थेलेसेमिया के मरीजो के लाभार्थ १०० जितनी बोटल रक्तदान किया था।

हर शनिवार को अलग-अलग हरिभक्तो के घर सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है। महिने में २ शनिवार शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) संत मंडल के साथ पधार कर कथा-वार्ता का सुंदर लाभ देते है । कई बार रविवार को श्रीमती शा.ची.ला.म्यु. जनरल अस्पताल में फल बाँटे जाते है।

(-गोरधनभाई - सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर - नवा वाडज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के दोनो मंदिर में पाटोत्सव के उपलक्ष्यमें श्रीमद् सत्संगि जीवन पंचान्ह पारायण दि. २३-३-१२ से २७-३-१२ तक शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (मूली) के वक्तापद पर हुई । दि. २७-३-१२ को ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक हुआ था । प.पू. बडे महाराजश्रीने भाईयो और बहनो के मंदिर में अन्नकुट की आरती की थी । पश्चात प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी आदि संतो की प्रेरकवाणी के पश्चात प.पू. बडे. महाराजश्रीने यजमान परिवार और हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. बीपीनभाई ओच्छवलाल शाह, पारायण के यजमान श्री रमेशभाई बालजीभाई पोरीया और गं.स्व. शांताबहन परसोत्तमदास पटेल और मंजुला बहन बीपीनभाई तथा चंद्रीका बहन कनुभाई भावसार बहनो के मंदिर के यजमान थे। चैत्र कृष्ण-१५ को श्री हनुमान जयंती पर शास्त्री गोपालभाई ने सुंदर पूजा करवाई थी । प.भ. गोविंदभाई हरिभाई पटेल यजमान बने थे । हरिभक्त दर्शन कर के धन्य हुए थे।

(-शंभुदान पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर - माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी अलग-अलग गाँव में सभा करते है। माणेकपुर मंदिर के रजतजयंति पर माणसा, पिलवाई, अंबोड, गुनमा, मातापुर (छाला) तथा राजपुर में प.भ. कांतिभाई की जीवनचर्या पर महापूजा सभा आर.के.पटेल के वहाँ हुई थी । पाजेपुर की सभा में महंतस्वामी, चंद्रप्रकाश स्वामी, माधवस्वामी और भक्ति स्वामी ने कथा-वार्ता का लाभ दिया था।

(-श्री न.ना. देव युवक मंडल-माणसा)

श्री स्वामिनारायण मंदरि - सम्मौ

यहाँ मंदिरमें चैत्र कृष्ण-९ पर सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का २३१ वाँ प्राकट्योत्सव

धामधूम से मनाया गया । इस अवसर पर नारायणघाट मंदिर से पी.पी. स्वामी तथा शा. अभयप्रकाशदासजीने भगवान स्वामिनारायण का महिमा समझाया था पश्चात हरिभक्तोने कीर्तन भजन किये थे ।

(-कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, नारायणघाट पर सुंदरकांडका पाठ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी और स.गु.शा.स्वा.पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शनसे प.पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी प्रस्थापित श्री हनुमानजी महाराज के समक्ष सुंदरकांड का आयोजन हुआ था । वक्तापद पर श्री अश्विनभाई पाठक बैठे थे । और मधुर कंठ से सुंदर पाठ किया गया था । इस अवसर के यजमान प.भ. परसोत्तमदास नारायणदास पटेल (माणसा), ह. हर्षदभाई, श्री अजयभाई पटेल और कमलेशभाई रहे थे ।

(-शा. दिव्यप्रकाशदास)

श्री प्रभा हनुमानजी - जमीयतपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराज के आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं प.पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से चराडवा, श्री स्वामिनारायण मंदिर का ९वाँ पाटोत्सव १९-४-१२ को धामधूमसे मनाया गया था । इस अवसर पर माणसा महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाश दासजीने सुंदर प्रवचन दिया था । इस अवसर पर संजयभाई, कमलेशभाई, महेन्द्रभाई, मंदिर के कोठारी, पूजारी और माणसा से आर.के. पटेल और वल्लभभाई पटेलने सुंदर सहयोग प्रदान किया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, पालडी कांक्रज ६ठ्ठा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुर आधिन पालडी कांक्रज मंदिर का ६ठ्ठा पाटोत्सव दि. १३-४-१२ को जेतलपुर मंदिर के महंत पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मनाया गया । पहले महापूजा, अभिषेक के पश्चात आरती और अन्नकुट उत्सव किया गया । सभामें शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीने भगवानकी महिमा समझायी थी । अंतमें पू. आत्मप्रकाशदासजीने आशीर्वाद दिया था । हरिभक्त दर्शन कर के धन्य हुए थे । यजमान श्री एवं स्वयंसेवको की सेवा प्रेरणारुप थी ।

नरनारायणदेव आधिन नूतनमंदिर के खातमुहूर्त तथा बिलोद्रा गाँव में यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी । (कालुपुर, महंत और स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी. (नारायणघाट) के मार्गदर्शन से बिलोद्रा गाँव में नये मंदिर के खातमुहूर्त के उपलक्ष्यमें त्रिदिनात्मक पारायण का आयोजन किया गया था ।

यहाँ पर मंदिर हो ऐसा संकल्प प.पू. आचार्य महाराजश्रीने किया था । जिसे पूर्ण करने का प्रारंभ खात मुहूर्त के रुप में हुआ था जिसकी विधिप.पू.ध.धु. महाराजश्री के करकमलो से हुई थी । सभी गाँव वालो के सहयोग से निदिनात्मक कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर हुई थी । पूर्णाहुति पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संतमंडल के साथ पधारे थे यहाँ धामधूमसे शोभायात्रा आयोजित हुई थी । यहाँ प.पू. आचार्य महाराजश्रीने खातमुहुर्त कर के पारायण का समापन किया था । और सभा में उपस्थिति सभी संत हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

(-स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर - चांदरवेडा (५० वर्ष) सुवर्णजयंती महोत्सव

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर, चांदखेड़ा के ५० वर्ष पूर्ण होने पर सुवर्णजयन्ती महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शास्त्री स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु.

देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता.१८-४-१२ से ता.२२-४-१२ तक सम्पन्न हुआ।

आज से ५० वर्ष पूर्व इस मंदिरमें प.पू. आचार्य देवेन्द्र प्रसादजी महाराज ने मूर्ति प्रतिष्ठा की थी। आज उस मंदिर का सुवर्णजयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समस्त लेउवा पाटीदार समाज के हरिभक्तों के सहयोग से यह उत्सव निश्चित किया गया था। जिसके उपलक्ष्य मे धर्मकुल का पदार्पण, शोभायात्रा, पोथीयात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाये गये थे। इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगि जीवन पंचाह्न पारायण के वक्ता स्वामी रामकृष्ण दासजी (कोटेश्वर) थे। अगल-बगल विस्तार के बहुत सारे हरिभक्त कथा सुनते के लिये पधारे थे। कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सभा में पधार कर कथा की पूर्णाहुति किये थे। धूमधाम से भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। गाँव के युवानों तथा बालको का प.पू. लालजी महाराज के हाथो से सम्मान किया गया था। इस सभा में पधारने वालें प.पू.ब्रा. राजेश्वरानन्दजी, स्वा. विश्वस्वरुपदासजी स्वा. दिव्यप्रकाश दासजी, स्वा. कुंजबिहारी दासजी की प्रेरकवाणी के बाद पू.लालजी महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्य स्वरुप दासजीने दिया था। (-पार्षद महिपाल भगत)

मूलीप्रदेश सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर मंदिर में श्री हरिजयंती संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल ९ को श्री हरिजयंती के शुभ अवसर पर प्रातः ७.३० से ११.३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र का अखंड धुनि तथा ११.३० से १२.०० बजे तक श्री राम जन्मोत्सव एव आरती, इसी तरह सायंकाल ५.३० से ७.३० तक शहर में सुशोभित वाहनों में स्वामिनारायण कीर्तन के साथ शोभायात्रा निकली थी। इस प्रसंग पर मूली मंदिर के सन्त तथा शहर-गाँव के हरिभक्त भाग लिये थे। रात्रि १०.१० बजे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण का प्रागट्योत्सव तथा आरती धूमधाम से मनाई गयी थी समग्र आयोजन कोठारीस्वामी ने किया था।

(-शेलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

मीड वेस्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर, इटारका शिकागो

श्री नरनारायण देव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी नीलकंठ प्रसाददासजी की प्रेरणा से ३० मार्च को यहाँ पर है हेल्थ क्लीनिक के लाभार्थ एक हास्य प्रोग्राम का आयोजन किया गया था। शिकागो के अग्रगण्य नागरिको ने तथा अपने हरिभक्तो ने उदारभाव से दान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया था। इस प्रसंग पर आये हुये सभी भक्तों को भजन का लाभ दिया गया था। श्री जे.पी. पटेल ने मंदिर में आँख से सम्बन्धित डॉक्टरो के सारे उपकरणों की सुन्दर व्यवस्था दान रुपमें की थी जिसके लिये उनका सन्मान किया गया था।

श्री विष्णुभाई, श्री प्रशांत कवि तथा रसोई समिति ने सुन्दर सेवा का कार्य किया था। युवक मंडल ने पार्किग व्यवस्था सम्हाली थी।

इस महीने में चैत्र वद-३ को अपने प.पू. बड़े महाराजश्री का ६९ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। एक यजमान हरीभक्त ने हरी मंदिर में दान देकर आरती का लाभ लिया था। महंत स्वामीने प.पू. बड़े महाराजश्री के ६९ वें वर्ष के अलौकिक जीवन काल की मनमोहक बातें बताकर भक्तों को भावुक बना दिया था। श्री स्वामिनारायण म्युजियम का सभी हरिभक्त अपने जीवन में एक बार भी दर्शन करेंगे तो उनका मोक्ष का द्वार खुल जायेगा। अन्त में सभी ने केक काटकर ६९ वें वर्ष को आनन्द के साथ मनाया था

कोलोनिया मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

२५ मार्च रविवार को सायंकाल ५ बजे से ६ बजे

के बीज में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री, जेतलपुर धाम के पू.पी.पी. स्वामी, चेरीहील, थोलोनिया तथा विहोकन मंदिर के महंत स्वामी तथा पू. बिन्दूराजा, श्री सुप्रत कुमार एवं श्री सौम्यकुमार एवं भक्तराज वनराज की उपस्थितिमें समग्र उत्सव सम्पन्न हुआ था। अनेक रंग विरंग के फूलों से भगवान को सजाया गया था। दर्शन का लाभ लेकर भक्तजन आनंदप्राप्त कर रहे थे। युवक मंडल ने सुन्दर सेवा की थी।

चेरीहील के महंत स्वामी विश्वप्रकाश दासजी विहोकन मंदिर के महंत स्वामी माधव प्रसाददासजी, जेतलपुर धाम के पू. पी.वी. स्वामी ने धर्मकुल की परम्परा का बड़ा सुन्दर विवेचन किया था। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुये बताया कि बालक हमारी अमूल्य धरोहर हैं, संपत्ति हैं इनका किस तरह से रक्षण हो, उनकों किस तरह से संस्कार दिये जांय यह सब आप सभी को ध्यान देना है। बजार में वो सब कुछ मिल सकता है लेकिन संस्कार नहीं मिलेगा। यदि जीवन में संस्कार का अभाव आजायेगा तो जीवन में कभी भी शांति नहीं मिलेगी। ऐसे सुंदर मंदिरों के माध्यम से संस्कार का सिंचन होता है इसलिये आप तो मंदिर आयें ही साथ अपने बालकों को अवश्य लायें। जीवन में इधर-उधर भटकने से भगवान तो मिलते नहीं है और शांति भी चलीजाती है इसलिये एकस्थान पर निष्ठा रखकर समर्पित भाव से भगवान की भजन-भक्ति करें। इस तरह सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। सभी दर्शन करके प्रभु का प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किया।

(-प्रवीणभाई शाह)

विहोकन मंदिर में रामनवमी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर में रविवार रामनवमी का विहोकन, जर्सोसीटी, एडीसीन, कोलोनिया, पारसीप, चेरीहील तथा न्युयोर्क के सभी भक्तों ने साथ मिलकर भगवान स्वामिनारायण की जन्मजयन्ती धूमधाम से मनाई। सभा में बहनों के विभाग में पू. बिन्दूराजा, श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार तथा संतो की सभा में विहोकन, चेरीहल तथा कोलोनिया के महंत स्वामी एवं हरीभक्त बड़ी संख्या में पधारे हुये थे। संतोने श्री स्वामिनारायण भगवान का अलौकिक माहात्म्य समझाया था। सभी को श्री हरि की आज्ञा में रहने के लिये प्रेरित किया गया। जन्मोत्सव की आरती का दर्शन करके सभी धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

(-प्रवीणभाई शाह)

लूईबील - (KENTUCKV) (I.S.S.O. चेष्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से ता.२१-४-१२ शनिवार को I.S.S.O. चेष्टर लुईबील में हिन्दु मंदिर में १०० जितने हरिभक्तोंने कथा धुन-कीर्तन-भजन इत्यादि समूह में किया था। के.पी. स्वामी ने कथा का सुंदर लाभ दिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से यहाँ पर सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है। अपने हरीभक्त हसमुखभाई, डाह्याभाई, प्रकाशभाई, परसोत्तमभाई, घनश्यामभाई, विष्णुभाई इत्यादि भक्तों ने प्रेरणात्मक सेवा की थी। (-विष्णुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, क्लिवलेन्ड

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराज श्री की आज्ञा से क्लिवलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता.१-४-१२ चैत्र शुक्ल-९ को श्री हरिजयन्ती का उत्सव मनाया गया था। २१ परिवार यजमान बने थे 'जिसमें' अभिषेक, पारणा में ठाकुरजी को झुलाने का लाभ लिये थे। दूर दूर से हरीभक्त दर्शन के लिये पधारे थे। चैत्र शुक्ल-१५ ता.६-४-१२ को मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था। ब्राह्मणों ने हनुमानजी का विधिवत पूजन करवाया था। १५० जिते हरीभक्त यज्ञ का लाभ लिये थे। बहनों की सेवा सराहनीय थी। के. पी. स्वामीने कथा का लाभ दिया था।

(-प्रकाश पटेल)

सिनिसिनाटी I.S.S.O. चेष्टर

यहाँ के सिनसिनाटी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. २०-३-१२ को संत पार्षदों के साथ पधारे थे। २ घन्टे में ही १५ जितने हरीभक्तों के घरों में पदार्पण करके आशीर्वाद प्रदान किये थे। सायंकाल श्री किरीटभाई के घर पर सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें करीब १५० जितने हरीभक्त भाग लिये थे। सभा में पू. बड़े पी.पी. स्वामी ने कथा का लाभ दिया था। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर डांगरवा के किरीटभाई, महेन्द्रभाई प्रहलादभाई तथा कांतिभाई तथा बहनों ने उत्तम सेवा की थी।

(-किरीटभाई पटेल)

साउथ जर्सी मंदिर में मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सिमेन्सेन में ता.६-४-१२ चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमान जयन्ती के अवसर पर यज्ञ का सुन्दर आयोजन स्वा. विश्वप्रकाशदास तथा स्वा. अभिषेक प्रसादजी ने किया था। ५० जितने कपल हरिभक्त लाभ लिये थे। १५०० जितने हरीभक्तों को महंत स्वामी ने कथा का रसपान करवाया था। बहनों की रसोई की सेवा सराहनीय थी। नवीनभाई, हीराभाई, कार्तिकभाई, भरतभाई तथा घनश्यामभाई की सेवाप्रेरणारुप थी।

(- महंतस्वामी साउथ जर्सी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायण देव देश के प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। हरीभक्त भी इन उत्सवों में बड़ी संख्या में उपस्थित होते हैं। चैत्र शुक्ल-९ रविवार को श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। स्वा. सत्यस्वरुपदासजीने श्री स्वामिनारायण भगवान की चरित्रलीला का सुन्दर वर्णन किया था। युवक मंडलने रास किया था। बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम किया था। इस प्रसंग पर यजमान श्री रश्मिभाई पटेल थे। चैत्र शुक्ल-१५ को श्री यजमान श्री रश्मिभाई पटेल थे। चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमान जयन्ती प्रसंग पर सुन्दरकांड का पाठ किया गया था।

(-एटलान्टा मंदिर कमेटी)

कोलंबस (I.S.S.O. चेष्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री वर्तमान में अमेरिका की पात्रा में ता.९-३-१२ को पधारे थे। सायंकाल ५.०० से २ बजे तक सभा में पू.पी.पी. स्वामी व्रजवल्लभ स्वामी, माधव स्वामी तथा शान्ति स्वामी ने सुन्दर कथा का लाभ दिया था। १२५ जितने हरिभक्त अपने घरों में प.पू. आचार्य महाराजश्री को अपने घर पर पदार्पण करवाये थे। यहाँ से सिनसिनाटी पधारे थे। इस प्रसंग पर चैत्रीभाई, राकेशभाई, रवि, हितेशभाई, प्रवीनभाई, बंकिमभाई, विपीनभाई तथा बहनों की सेवा सराहनीय थी।

(-जयदीपभाई)

हरिद्वार श्री स्वामिनारायण मंदिर

महंत स.गु.शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी

मो. नं. ७८९५१२७९८०

नीचे के शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने नये महंत स्वामी की नियुक्ति की है।

मूली स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत श्री स.गु. स्वामी श्याम सुन्दरदासजी गुरु स.गु. स्वा. गोपालचरण दासजी

चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर

नये महंत श्री स.गु.स्वा. उत्तम प्रियदासजी

गुरु स.गु.स्वा. हरीकृष्णदासजी (कच्छी)

तथा स्वा. ब्रह्मबिहारी दासजी

गुरु स.गु.स्वा. उत्तम प्रियदासजी

संप्रदाय का गौरव

स्टेट के स्टुडेन्ट का रिसर्च अहमदाबाद शहर में ग्रिन बिल्डिग का कोन्सेप्ट - विदेश की तरह अहमदाबाद शहर में भी ग्रीन बिल्डींग का कोन्सेप्ट को रियालिटी की तरफ लेजाने के लिये एक स्टेप सेप्ट के स्टुडेन्ट भरे है । कोन्वोकेशन में स्ट्रक्चर डिजाइन में एम. टेक की डिग्री लेनेवाले अपने श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान सत्संगी श्री भूपेशभाई परमार का सुपुत्र खेलन परमार ने एक रिसर्च किया है । सस्टेनेबल जीयो पोलिमर क्रांक्रिट विषय पर संशोधन करके अहमदाबाद की बिल्डींग को इको फ्रेन्टली किस तरह किया जा सके उस बेज पर आगे बढ रहे है। इनकी विशेष प्रगति के लिये श्री नरनारायण देव को प्रार्थना।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

दाणीलीमड़ा - अहमदाबाद : प.भ. नारणभाई छोटाभाई पटेल (उ. २३ वर्ष) ता. १५-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

माधवगढ - प्रांतीजदेश : प. श्री रचितकुमार हसमुखभाई ता. ६-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

बलोल (भाल) : श्री लक्ष्मणभाई ठाकरसीभाई खटाणा के सुपुत्र श्री दिलीपभाई (उ. ३२ वर्ष) ता. १९-४-१२ को (बड़े महाराज श्री का दर्शन करके) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है। उनके परिवार को भगवान बल दें ऐसी प्रार्थना।

नारणपुरा - अहमदाबाद : प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री देवेन्द्र प्रसादजी महाराजश्री से लेकर आज तक धर्मकुल परिवार के आश्रित डॉ. श्री रमणभाई एन. पंचाल ता.१३-४-१२ को प्रभु का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

अहमदाबाद : प.भ. राजेन्द्रभाई हरिलाल भट्ट (रिटायर्ड आसि. इन्कमटैक्स कमिश्नर) (अ.नि.प.भ. नानजीभाई इच्छाराम शुक्ल के दामाद श्री केशवलाल एम. भट्ट डिस्ट्रीक्ट एन्ड सेशन्स जज के दामाद) चैत्र शुक्ल-१५ ता.६-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं .

अहमदाबाद : प.भ. बाबूभाई रमणलाल भट्ट (लुणावाडा) ता. ४-३-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

वडोदरा : प.भ. हर्षदभाई जेठालाल शाह उमरेठ निवासी अ.नि.श्री मनीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब के भतीजे माद्यकृष्ण-११ ता.२७-२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।